नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

धर्मेंद्र का जाना एक युग का अंत

भारतीय सिनेमा की लंबी परंपरा में अनेक सितारे आए, चमके और इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गए. लेकिन कुछ नाम ऐसे होते हैं, जिनकी चमक सिर्फ पर्दे तक सीमित नहीं रहती, वह करोड़ों दिलों में उतर जाती है. धर्मेंद्र उन्हीं दुर्लभ कलाकारों में से एक थे. उनका जाना केवल एक अभिनेता का खोना नहीं है, बल्कि उस मासूम, सादगी-भरे, दमदार हिंदी सिनेमा की विदाई है, जिसे उन्होंने अपने पूरे मन से जिया. पंजाब के एक छोटे से गाँव से मुंबई तक की दूरी केवल किलोमीटरों में नहीं मापी जा सकती. धर्मेंद्र ने इसे अपने सपनों, संघर्षों और अथक मेहनत से तय किया. 1960 के दशक में जब उन्हें पहला मौका मिला, तब किसी ने नहीं सोचा था कि यह युवा आगे चलकर भारतीय सिनेमा का चेहरा बनेगा. 65 साल के करियर और 300 से अधिक फिल्मों में उनका दिखाया गया अभिनय बताता है कि सिनेमा उनके लिए महज काम नहीं था — वह उनका जुनून था. धर्मेंद्र की सबसे बड़ी खूबी थी उनकी बहुमुखी प्रतिभा. वह किसी एक सांचे में नहीं ढलते थे, बल्कि हर किरदार में अपनी अलग छाप छोड़ते थे. 'अनपढ़', 'शराफत' और 'फूल और पत्थर' जैसी फिल्मों में उनका रूमानी अंदाज सहज, सादगी से भरा और दिल को छू लेने वाला था. वह अपने दौर के सबसे ईमानदार रोमांटिक नायकों में गिने जाते थे.

धर्मेंद जब स्क्रीन पर एक्शन करते थे, तो वह महज कोरियोग्राफी नहीं होती थी. उसमें रफ्तार, ताकत और ऊर्जा का संगम होता था. 'चरस', 'जुगनू', 'लोहा' इन सभी फिल्मों ने उन्हें भारतीय सिनेमा का असली एक्शन स्टार बना दिया. 'चुपके चुपके' में प्रोफेसर परिमल त्रिपाठी के रूप में उनकी कॉमिक टाइमिंग आज भी बेजोड़ मानी जाती है. वह बिना किसी शोर-शराबे, बिना अतिशयोक्ति के दर्शकों को हंसा देते थे, यह गुण बहुत कम कलाकारों में मिलता है. बसंती, इन कुत्तों के सामने मत नाचना.' यह संवाद सिर्फ सिनेमाई इतिहास नहीं, भारतीय संस्कृति का हिस्सा बन चुका है. 'वीरू' का उनका किरदार उनकी लोकप्रियता की पराकाष्ठा था. 1997 में फिल्मफेयर लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड और 2012 में पद्म भूषण प्राप्त करना इस बात का प्रमाण है कि उनका योगदान केवल लोकप्रियता तक सीमित नहीं था, बल्कि भारतीय कला परंपरा में भी उनका विशेष स्थान था.

धर्मेंद्र वह कलाकार थे जिनकी फिल्मों पर परिवार साथ बैठकर हंसता था, रोमांस महसूस करता था, और एक्शन पर तालियाँ बजाता था. उनकी स्क्रीन-प्रेजेंस में बनावटीपन नहीं था. वह गाँव का लड़का भी लगते थे, शहरी प्रेमी भी; मज़बूत हीरो भी और संवेदनशील इंसान भी. शायद यही वजह थी कि वह केवल स्टार नहीं बने, जनप्रिय नायक बने. धर्मेंद्र चले गए, पर उनकी मुस्कान, उनकी आवाज़, उनका सहज अभिनय और उनका मानवीय आकर्षण हमेशा जीवित रहेगा. उनकी फिल्में इस देश की सांस्कृतिक विरासत हैं और रहेंगी. आज जब हम इस महान कलाकार को अलविदा कहते हैं, तो यह भी स्वीकार करना होगा कि उन्होंने हमें छः दशकों तक मनोरंजन, प्रेरणा और आनंद दिया. उनका जाना दुखद है, लेकिन उनकी विरासत अमर है. दरअसल, माया नगरी की चकाचौंध में भी धर्मेंद्र एक ऐसी शख्सियत थे, जो हमेशा इस देश की मिट्टी से, खास तौर पर पंजाबी तासीर से जुड़े रहे. इतने बड़े स्टार होने के बावजूद वो बेहद सरल और सहज व्यक्तित्व के मालिक थे. उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि !

मालवा- निमाड़ की डायरी

राजनीतिक पटल पर फिर मालवा-निमाड़ की तूती

संजय व्यास

शाजापुर से श्याम टेलर की भाजपा युवा मोर्चा अध्यक्ष पद पर ताजपोशी से राजनीतिक पटल पर फिर मालवा-निमाड़ का पलड़ा भारी रहा.

उज्जैन से मुख्यमंत्री मोहन यादव, मंदसौर-नीमच से उप मुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा भाजपा ने दे रखे हैं, वहीं इंदौर से प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी, हाल ही में नियुक्त प्रदेश महिला कांग्रेस अध्यक्ष रीना सेतिया और धार-गंधवानी से नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार व झाबुआ से राष्ट्रीय आदिवासी कांग्रेस अध्यक्ष विक्रांत भूरिया होने से सियासत में मालवा-निमाड़ की तूती बोल रही है. नवनियुक्त भाजपा युवा मोर्चा अध्यक्ष श्याम टेलर अब तक इसी इकाई के शाजापुर जिलाध्यक्ष थे.

प्रदेशाध्यक्ष बनाने में वे संगठन की पहली पसंद थे. विद्यार्थी परिषद से लेकर युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष तक उनके टीम वर्क की खूबी, पार्टी अभियानों में उनकी सफलतम भूमिका

उन्हें पार्टी नेतृत्व की नजर में अग्रणी लाने में मददगार साबित हुई. शीर्ष नेतृत्व ने युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष पद के लिए कई नामों पर विचार किया, जिसमें श्याम टेलर की नेतृत्व क्षमता से प्रभावित होकर अंततः उन्हें इस महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त कर दिया. वैसे श्याम टेलर भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा के खास माने जाते हैं. वह अभाविप की छात्र राजनीति के समय से ही वीडी शर्मा से जुड़े हैं.

टेलर को युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष बनाए जाने में भी उनकी खास भूमिका मानी जाती है. वहीं जिले में टेलर का सांसद महेंद्र सिंह सोलंकी और विधायक अरुण भीमावद से भी तालमेल अच्छा रहा है.

जिले को मिला दूसरी बार अध्यक्ष

शाजापुर शहर से यह पहला अवसर होगा जब युवा मोर्चा का प्रदेश अध्यक्ष शहर की माटी से किसी युवा को बनाया गया है. साथ ही भारतीय जनता युवा मोर्चा के इतिहास में पहली बार हुआ है कि महज 28 वर्ष की उम्र में ही किसी को प्रदेश अध्यक्ष की कमान सौंपी गई. इतनी छोटी उम्र में श्याम टेलर को भाजपा संगठन ने इतना बड़ा पद दिया. हालांकि चार दशक पहले विजेंद्र सिंह सिसौदिया युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष रहे हैं, लेकिन वे शुजालपुर से आते थे.

अब प्रदेश भाजपा के दो मंत्री के बाद अब सबसे भारी भरकम युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष भी शाजापुर को मिला. भाजपा संगठन ने उन पर भरोसा जताकर बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है लिहाजा उनकी राह भी आसान नहीं रहने वाली. भाजपा युवा मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष के रूप में अब उनका काम केवल संगठन विस्तार तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि युवाओं को सियासत, राष्ट्रहित और विकास के मुद्दों से जोडने की चुनौती भी उनके सामने होगी.

खुद की गरिमा गिरा गए खेर

विगत दिनों मंदसौर में आयोजित पशुपतिनाथ महादेव मेले में ख्यात गायक का बरताव गरिमापूर्ण नहीं था. उनकी उटपटांग टिप्पणियां जनता को आहत कर गई. मेले में कार्यक्रम प्रस्तुति देने पहुंचे गायक कैलाश खेर ने मंच से कुछ ऐसी बातें कहीं जो लोगों में उनकी नकारात्मक छबि पेश कर गई. उन्होंने नगर पालिका को गरीब और कंजूस कहा और इसके साथ ही नगर पालिका अध्यक्ष और पार्षदों को अयोग्य तक कह दिया, उन्होंने विधायक तक के नाम को लेकर मजाक उड़ाया. उन्होंने भगवान पशुपतिनाथ का भी ध्यान नहीं रखा. सारा मामला मनमानी फीस न मिलने से जुड़ा बताया जा रहा है. यह एक सामाजिक- धार्मिक कार्यक्रम था. ऐसे में उनका ऐसा व्यवहार लोगों की अपेक्षा के विपरित रहा. लोगों को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा, बल्कि क्षेत्र से लेकर देशभर में सोशल मीडिया पर किए जा रहे ट्रोल से उनकी इमेज ही बिगड़ रही है.

सरयू से संगम तक

संजय सिंह की पदयात्रा मायने रखती है

दिलीप पांडेय

भारत में पदयात्रा और अनशन सिर्फ भावनात्मक प्रतीक नहीं रहे, बल्कि एक गहरी राजनीतिक और दार्शनिक परंपरा का हिस्सा रहे हैं। आज़ादी के आंदोलन से लेकर आज तक, इन तरीकों ने सत्ता को नैतिक चुनौती दी है और जनता के भीतर भरोसे की एक अलग ही नींव रखी है। इसी परंपरा को राज्यसभा सांसद संजय सिंह ने 12 से 24 नवंबर तक उत्तर प्रदेश में रोज़गार दो, सामाजिक न्याय दो पदयात्रा के ज़रिये आगे बढ़ाया, सरयू के तट से संगम तक की यह यात्रा बताती है कि जनता के मुद्दों को समझने और उठाने का सबसे प्रामाणिक तरीका आज भी ज़मीन पर उतरकर चलने में ही है।

अगर इतिहास की ओर देखें, तो गांधी का दांडी मार्च इस परंपरा की सबसे प्रभावशाली मिसाल है। 1930 में नमक कानून तोड़ने के लिए 240 मील की उनकी पैदल यात्रा देखने में भले साधारण लगे, लेकिन इसके नतीजे गहरे थे। इसने ब्रिटिश शासन की अन्यायपूर्ण नीतियों को उजागर किया, जनता को एकजुट किया और अंग्रेजी सत्ता को वार्ता के लिए मजबूर किया। हथियार, कानून और दमन की ताकत अंग्रेजों के पास थी, लेकिन नैतिक बल और जनता का विश्वास गांधी के कदमों में था।

> पारंपरिक भारतीय प्रतिरोध की एक खूबी यह भी है कि वह दिल में जगह बनाता है। सोशल मीडिया पर चलने वाले ट्रेंड कुछ घंटों में समाप्त हो जाते हैं, भाषण अखबार के अगले दिन तक भूल जाते हैं, लेकिन एक पदयात्रा, धूल, धूप, पसीने और मुलाक़ातों से बनी, लंबा असर छोड़ती है। इसलिए सरयू से संगम तक की यह यात्रा याद दिलाती है कि अहिंसा, जन-संपर्क, नैतिक आग्रह और पैदल चलकर जनता तक पहुंचने की राजनीति आज भी वैसी ही प्रासंगिक है जैसी आज़ादी के संघर्ष में थी। यह सिर्फ विरोध नहीं, बल्कि उम्मीद और भरोसे का मार्ग है। और अगर यह राह ईमानदारी से, जनता के सवालों के प्रति प्रतिबद्धता के साथ जारी रही, तो यह केवल एक पदयात्रा नहीं, एक बड़ा सामाजिक आंदोलन बन सकता है। और सच कहें तो, आज बहुत कम नेता हैं जिनमें गलत को गलत कहने का साहस बचा है। संजय सिंह बिना किसी झिझक, लाग-लपेट के, पूरी दृढ़ता और सीधी रीढ़ के साथ सच बोलते हैं। ऐसे व्यक्ति के साथ खड़ा होना तो हमारी न्यूनतम जिम्मेदारी है.

1950 के दशक में विनोबा भावे का भूदान आंदोलन भी पैदल चलने की इसी परंपरा का महत्वपूर्ण अध्याय है। विनोबा गांव-गांव पैदल घूमे और ज़मींदारों से ज़मीन दान करने की अपील की। आंदोलन भले पूरी तरह भूमि-असमानता को समाप्त न कर सका हो, लेकिन पैदल चलकर, सीधे लोगों से मिलकर, नैतिक संवाद स्थापित कर उसने समाज को यह महसूस कराया कि भूमि-सुधार सिर्फ सरकारी फाइलों का विषय नहीं, यह सामाजिक न्याय का प्रश्न है।

1970 के दशक का जेपी आंदोलन तो जनता और पदयात्राओं का अखाड़ा ही था। जयप्रकाश नारायण ने छात्रों, मजदूरों, युवाओं और आम नागरिकों को इस तरह साथ जोड़ा कि आपातकाल जैसी सशक्त सत्ता व्यवस्था के सामने भी जनता की आवाज़ भारी पड़ गई। इस आंदोलन ने दिखा दिया कि जब जनता जमीन पर उतरती है, तो शासन को अपने निर्णय बदलने पड़ते हैं।

इतिहास से इन उदाहरणों का सार यह है कि जब प्रतिरोध पैरों से चलकर आता है और जब कोई नेता खुद कठिनाई उठाते हुए जनता तक पहुंचता है, तो उस आवाज़ को अनसुना करना आसान नहीं होता। पदयात्रा भरोसे की बुनियाद बनाती है, और वही किसी भी आंदोलन की सबसे सच्ची ताकत है।

इसी पृष्ठभूमि में संजय सिंह की रोज़गार दो, सामाजिक न्याय दो पदयात्रा को देखें। सरयू से संगम तक का यह सफर भूगोल भर नहीं है, यह सांस्कृतिक स्मृतियों और आस्थाओं को जोड़ने वाली यात्रा है। जिन दो नदियों के बीच यह पदयात्रा चली, वे उत्तर भारत की पहचान, इतिहास और आध्यात्मिक-धार्मिक चेतना को धारण करती हैं। ऐसे मार्ग पर चलकर बेरोज़गारी और सामाजिक न्याय की मांग को उठाना इन मुद्दों को सिर्फ प्रशासनिक नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक प्रश्न बना देता है।

उत्तर प्रदेश के लाखों युवाओं में आज बेरोज़गारी एक लगातार जलता हुआ सवाल है - अटकी हुई भर्तियाँ, दो-दो साल तक न होने वाली परीक्षाएँ, पेपर लीक, और अवसरों की भारी कमी। दूसरी ओर, सामाजिक न्याय आज भी कई समूहों के लिए कागज़ी वादा जैसा लगता है। ऐसे समय में गांव-गांव जाकर, सीधे लोगों से बात करके, उनकी तकलीफ़ों को समझकर चलना राजनीति को ज़मीन की सच्चाई से जोड़ता है। यह तरीका दूसरे किसी भी माध्यम की तुलना में भरोसा तेज़ी से बनाता है।

लेकिन साफ बात यह है कि हर पदयात्रा असरदार नहीं होती। अगर यह सिर्फ फ़ोटो खिंचवाने या औपचारिकता निभाने की कवायद लगे, तो जनता तुरंत दूरी बना लेती है। आज का नागरिक जागरूक है, वह इरादों की सच्चाई को पहचान लेता है। इसलिए किसी भी पदयात्रा की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह सच्चे जन-सवालों को लेकर कितनी ईमानदारी और स्थिरता से चलती है।

लेखक : आम आदमी पार्टी के उत्तर प्रदेश सह-प्रभारी और AAP Overseas के इंचार्ज हैं. वे लेखक, समावेशी पब्लिक पॉलिसी के अध्येता, और दर्शन-राजनीति शास्त्र के शोधार्थी है.

क्यों प्रभाव नहीं डाल पा रहे राहुल गांधी

ब्रिटेन में सिर्फ 1 उपचुनाव में लेबर पार्टी की हार के कारण प्रधानमंत्री कीर स्टारमर के इस्तीफे की मांग होने लगी. भारत में लगातार 3 आम चुनावों में पराजय के बावजूद कोई कांग्रेस नेतृत्व से इस्तीफे की मांग नहीं करता. कांग्रेस में प्रतिभाशाली व जनाधार रखनेवाले नए नेताओं को उभरने नहीं दिया जाता. इसलिए संगठन में ठहराव आ गया है. कांग्रेस पर वंशवादी राजनीति चलाने का बीजेपी का आरोप जनता के गले उतर गया है. 2000 के बाद जन्म लेनेवाली नई पीढ़ी को कांग्रेस के अतीत से कोई मतलब नहीं है. वह मोदी और बीजेपी से इसलिए प्रभावित है क्योंकि कांग्रेस ने उसके पास पहुंचने का कोई प्रयास ही नहीं किया. जिन 18 वर्ष के नवयुवाओं को कांग्रेस ने मताधिकार दिलाने की दिशा में पहल की थी, वही कांग्रेस को ठुकराते नजर आ रहे हैं. एक समय वह भी था जब संजय गांधी ने युवक कांग्रेस को सक्रिय व ताकतवर बनाकर इंदिरा गांधी को पुनः सत्ता में लाने की दिशा में काम किया था. तब युवाओं ने शाह आयोग का विरोध किया था तथा बुजुर्ग नेताओं की जनता पार्टी को 1980 के आम चुनाव में बाहर का रास्ता दिखलाया था. कांग्रेस की त्रासदी यह है कि वह राहुल गांधी के अलावा किसी को महत्व नहीं देती. जो

वोट चोर-गद्दी छोड़ वाले कांग्रेस के आंदोलन का कितना असर पड़ेगा, कहा नहीं जा सकता. राहुल गांधी खुद को सामान्य जनों से जोड़ने का पूरा प्रयास करते हैं लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हें बार-बार शहजादा कहकर तथा वंशवाद की आलोचना कर उन्हें प्रभावी नहीं होने दिया.

कांग्रेस की मदद करने जाता है, वह भी निशाने पर आ जाता है. तेलंगाना में एआई एमआईएम का कांग्रेस सरकार को पूरा सहयोग है लेकिन फिर भी इस दल को कांग्रेस ने बिहार चुनाव में बीजेपी की बी टीम करार दिया. अगले वर्ष राज्यसभा की 9 सीटों का चुनाव है. क्या कांग्रेस इसमें कुछ प्रभावशाली नेताओं को निर्वाचित कर अपना प्रभाव दिखा पाएगी? राहुल गांधी एक के बाद एक कितने ही मुद्दे उठाते हैं लेकिन सही होने पर भी जनता को प्रभावित नहीं कर पाते. अंबानी-अदाणी का मुद्दा, पेगासस जासूसी का मुद्दा हवा में उड़ गया.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

ना-ना करते प्यार तुम्हीं से कर बैठे ट्रंप व्हाइट हाउस में ममदानी से मिले

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप और न्यूयार्क के मेयर ममदानी की भेंट को लेकर हमें कुछ फिल्मी गीतों के मुखड़े याद आ रहे हैं जैसे कि यूं ही कोई मिल गया था सरे राह चलते-चलते! राहों में उनसे मुलाकात हो गई, जिससे डरते थे वही बात हो गई!'

हमने कहा, 'ट्रंप और ममदानी की भेंट रास्ते में नहीं बल्कि व्हाइट हाउस में हुई. ट्रंप जैसे कट्टर पूंजीवादी ने सोशलिस्ट विचारों के जोहरान ममदानी को व्हाइट हाउस आमंत्रित कर उनसे चर्चा की. यह भेंट कुछ ऐसी थी तू गंगा की मौज, मैं जमुना का धारा, रहेगा मिलन ये हमारा तुम्हारा!'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इतनी जल्दी किसी नतीजे पर मत पहुँचिए. ट्रंप सनकी स्वभाव के हैं. वे घर आए अतिथि का बुरी तरह अपमान भी कर सकते हैं. आपको याद होगा कि यक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की को उन्होंने इंसल्ट करके भूखा वापस भेज दिया था. तब लंच तैयार था और परोसने की तैयारी हो चुकी थी तभी ट्रंप भड़क गए थे. उन्होंने जेलेंस्की की हकालपट्टी करते हुए कहा- जस्ट गेट ऑफ माय लॉन.

इस तरह वह किसी को भी खदेड़ सकते हैं. जो भी मेहमान उनसे मिलने जाए, उसे गाना चाहिए- तुमने पुकारा और हम चले आए, जान हथेली पर ले आए!

हमने कहा, '80 वर्षीय ट्रंप ने अपने पोते की उम्र के 34 वर्षीय ममदानी से कोई दुर्व्यवहार नहीं किया और सभ्यतापूर्वक मिले. यह बात अलग है कि जब ममदानी चुनाव लड़ रहे थे तब ट्रंप ने उन्हें अमेरिका के लिए बेहद खतरनाक कम्युनिस्ट कहा था और ऐसा बाहरी व्यक्ति बताया था जो जन्म से अमेरिकी नागरिक नहीं है. न्यूयार्क जैसे वालस्ट्रीट, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर और टाइम्स स्क्वेयर वाले वैभवशाली शहर में ममदानी जैसा एशियाई मूल का व्यक्ति मेयर बन गया. इसके पीछे मेन और ब्रांक्स जैसे उपनगरों के एशियाई व अश्वेत मतदाताओं का ममदानी को व्यापक समर्थन था. ट्रंप खुद भी न्यूयार्क के हैं. ममदानी ने पूर्व गवर्नर क्यूमो को हराया और ट्रंप की नाक पर नींबू निचोड़ दिया. ट्रंप झल्लाए लेकिन कर भी क्या सकते थे! ममदानी के वामपंथी रुझान को देखते हुए कई बिलिनेयर्स उद्योगपति न्यूयार्क छोड़कर फ्लोरिडा में सेटल होने का मन बना रहे हैं जहां ट्रंप की आलीशान आरामगाह मार-ए-लागो है.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, ट्रंप ने ममदानी को पटाया होगा कि वह न्यूयार्क के गोरे अरबपतियों पर ज्यादा टैक्स न लगाएं.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12091 - डॉ. सागर खादीवाला

धातु या मिट्टी का बड़ा घडा, कलसा 3. पाठशाला (उर्दू) 4. हंसी, दिल्लगी 5. जाली, बनावटी 9. धिक्कार, भर्त्सना (उर्दू) 11. रात, निशा 12. कर्ण, श्रवणेंद्रिय 14. आठ चावल की एक पुरानी तौल 15. जिसे (किसी बात की) जानकारी न हो, असावधान (उर्दू) 16. चोट, आघात 17. कन्दरा, गुफा 19. लक्ष्मी 20. निवाला 21. आकर्षण (उर्दू) 22. चंद्रमा, अमृत (सं.) 23.

बाएं से दाएं
1. अग्नि, जलन, ताप 3. बड़ा दान, स्वर्ग की प्राप्ति के लिए दिया जानेवाला दान (सं.) 6. बोतल की डाट, कौआ 7. कसावट, अर्क 8. हुनर 10. पाजीपन, नटखट होने का भाव (उर्दू) 12. गालीचा 13. बलपूर्वक, जबरदस्ती 15. अर्थहीन, व्यर्थ, निरर्थक (उर्दू) 18. गधा, मूर्ख, कड़ा, खच्चर 20. खरीदार, क्रेता 22. सोमलता का रस 24. दूध से बनी एक मिठाई 25. उत्साह (उर्दू)

ऊपर से नीचे
1. नभ, गगन, आसमान (सं.) 2.

Solution 12090

वि	प्र	■	प	ची	सी	■	अ
धा	क	■	ल	ल	का	र	ना
न	ट	ख	ट	■	का	■	द
■	ना	दा	न	■	ई	त	र
प	■	न	■	वि	■	क	■
खा	रा	■	■	घ	ब	रा	ना
व	क्ष	■	फ	ट	का	र	ना
ज	स	■	वि	न	ना	■	र्थ

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में बैचारिक अशांति रहेगी, सत्संग से मन आध्यात्मिक शांति का अनुभव होगा, संतोष बना रहेगा, व्यवसायिक तनाव रहेगा, वर्ष के मध्य में पारिवारिक चिन्ता का कारण रहेगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक मित्रों का सहयोग और मार्गदर्शन प्राप्त होगा, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, नवीन योजनाओं का क्रियान्वयन होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों की नई योजनाओं का क्रियान्वयन होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों का दाम्पत्य जीवन सुखमय शांतिपूर्ण रहेगा, मिथुनऔर कन्या राशि के व्यक्तियों को सामाजिक मित्रों के कार्यों में व्यस्तता रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को राजनैतिक मित्र के सहयोग से पद परिवर्तन होगा, कर्क राशि के व्यक्तियोंको उत्तम सफलता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों के लिये योजना साकार होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को निजी पुरूषार्थ का लाभ मिलेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्पष्टवादी, अनुशासन प्रिय, महत्वाकांक्षी होगा, इसकी शिक्षा उत्तम रहेगी, नौकरी व्यापार दोनों में अच्छा लाभ होगा, एक से अधिक आय के साधन उपलब्ध होंगे, अनुकूल समय का लाभ उठाने में सक्षम रहेगा.

मेष- प्रतियोगी परीक्षा में अच्छी सफलता मिलेगी, संतान के व्यवहार से दुख होगा, अध्ययन रचनात्मक कार्यों में रूचि बढेगी, मन में प्रसन्नता रहेगी.

वृषभ- लेनदेन के मामले में आरोप प्रत्यारोप लगेंगे, परिश्रम के कार्यों में अनुकूलता रहेगी, समयानुसार निर्णय करना लाभकारी रहेगा.

मिथुन- विवादास्पद मामले सुलझनें के आसार हैं, कैरियर में बेहतर सफलता मिलेगी, व्यवसायिक प्रयासों में अनुकूलता रहेगी, मित्रों एवं प्रियजनों का सहयोग रहेगा.

कर्क- मेहमान नवाजी में समय बीतेगा, जल्दबाजी में गलती कर बढेंगे, शारीरिक अस्वस्यता रहेगी, पारिवारिक तनाव दूर होगा, मानसिक संतुष्टि रहेगी.

सिंह- अनुशासन की कमी से व्यवस्था बिगड़ सकती है, मनमौजी रवैया से नुकसान होगा, दूर गये मित्र के संबंध में कोई सुखद समाचार मिलेगा, साहस संयम से कार्य करें.

कन्या- भागदौड़ सफ्ल होगी, आजीविका के प्रयासों में सफ्लता मिलेगी, राजकीय सहयोग बना रहेगा, मन:स्थिति संतुलित रहेगी.

तुला- पारिवारिक मामले में आपसी सहमति से निर्णय करना लाभदायक, आकस्मिक धन लाभ होगा, सामाजिक कार्यो की रूपरेखा बनेगी.

वृश्चिक- कोई लाभ की योजना हाथ से निकल सकती है, अपने खर्च,में कटौती करें, मानसिक सुख एवं प्रसन्नता रहेगी, पूज्य व्यक्ति की सलाह उपयोगी रहेगी.

धनु- साझेदारी में नया कार्य शुरू कर सकते हैं, दुविधा से बाहर निकलें, अनावश्यक विवादों को न बढ़ायें, अतिथि आगमन होगा.

मकर- नए संपर्क आगे बढ़ने में सहायक रहेंगे, लेनदेन के मामले सुलझेंगे, आर्थिक कार्यों में शिथिलता रहेगी, उदर विकार रहेगा, रक्त पीड़ा हो सकती है.

कुम्भ- व्यापार में नये सौदे हाथ में आ सकते हैं, कार्ययोजना में बदलाव होगा, पड़ोसियों से मधुरता के भाव रहेंगे, उच्च शिक्षा आदि में विशेष खर्च होगा.

मीन- समय पर काम पूरा करने का दबाव रहेगा, साझेदारी टूटने का आसार हैं, भूमि संपत्ति के कार्यों में शिथिलता रहेगी, लापारवाही से कष्ट होगा

उदयकालीन ग्रह चाल

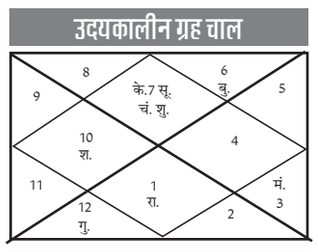

पंचांग

रा.मि. 04 संवत् 2082 मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमीं भौमवासरे रात 7/12, उत्तराषाढ़ नक्षत्रे रात 9/19, गण्ड योगे दिन 11/27, वव करणे सू.उ. 6/41, सू.अ. 5/19, चन्द्रचार मकर, शु.रा. 10, 12,1,4,5,8 अ.रा. 11,2,3,6,7,9 शुभांक- 3,5,9.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष शुक्ल पंचमीं को उत्तराषाढ़ नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, धातु, गुड़ खांड़, जौ, मटर, चना आदि वस्तुओं में मंदी होगी, शक्कर, अलसी, हींग, सरसों, अरड़ी, में तेजी का योग है,आज 11 बजकर 24 मिनिट से व्यापार करना लाभकारी रहेगा.

SUDOKU 7223

7	4	6		1		8		2
	5		8		7			
9				6				
	6		7	9		5		3
5				4				1
3		1		8	2		7	
				5				6
			4		3		9	
4		3		2		1	5	7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7222

8	7	9	4	2	5	6	1	3
5	6	3	8	1	7	4	2	9
4	1	2	6	9	3	5	8	7
1	9	8	3	7	4	2	6	5
7	3	4	2	5	6	8	9	1
2	5	6	1	8	9	7	3	4
9	8	5	7	3	2	1	4	6
6	2	7	9	4	1	3	5	8
3	4	1	5	6	8	9	7	2